Abdul Qaish
Assistant Professor
Political Science
Shershah College
Sasaram Bihar
abdul.qaishbhu@gmail.com

प्लेटो के न्याय सिद्धान्त की विशेषताएं

प्राचीन यूनान में न्याय के प्रचलित सिद्धांतों के आलोचनात्मक परीक्षण एवं प्रतिपादित न्याय सिद्धांत के आधार पर हम प्लेटो के न्याय सिद्धांत में निम्नलिखित विशेषताओं को देखते हैं।-

(1) प्लेटो के चिंतन में न्याय की जो अवधारणा अभिव्यक्त हुई है वह कोई बाहरी जगत की वस्तु न होकर व्यक्ति की आन्तरिक स्थिति है। किसी बाह्य शक्ति के द्वारा इसका आरोपण नही हुआ है बल्कि यह मनुष्य की अन्तर्रात्मा की ध्वनि है। यह मनुष्य की आत्मा का एक समन्वयपरक गुण है।

(2)⇒ प्लेटो ने आदर्श राज्य की स्थापना हेतु न्याय सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इनका न्याय सिद्धांत अहस्तक्षेप के सिद्धांत पर आधारित है। इसमे प्रत्येक व्यक्ति का कार्य निर्धारित है। प्रत्येक व्यक्ति से आशा की जाती है कि वह स्वयं के लिए निर्धारित कार्य करे तथा किसी दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप न करे।

(3)⇒ प्लेटो का न्याय सिद्धांत कार्य विशेषीकरण की मान्यता में विश्वास करता है। प्लेटो प्रत्येक मानव आत्मा में तीन नैसर्गिक गुणों यथा - विवेक, साहस एवं क्षुधा की बात रखते हुए इन गुणों के आधार पर तीन वर्गों यथा शासक वर्ग, सैनिक वर्ग एवं उत्पादक वर्ग की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने वर्ग हेतु निर्धारित कार्य करना चाहिए तथा दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप न करते हुए अपने प्राकृतिक गुण में दक्षता प्राप्त करने हेतु प्रयासरत होना चाहिए।

(4)⇒ प्लेटो का न्याय सिद्धांत सामाजिक एकता का सिद्धांत है यद्यपि की प्राकृतिक गुणों एवं कार्यों के आधार पर वह समाज को तीन वर्गों में विभाजित करता है लेकिन ये तीनों वर्ग भिन्न होते हुए भी सामाजिक एकता के प्रतीक हैं।

Scanned with CamScanner

(5)⇒ प्लेटो के चिंतन में राज्य एक नैतिक इकाई है वहीं उसका न्याय सिद्धांत एक नैतिक मान्यता है जो वर्तमान की कानूनी मान्यता से पृथक है।

प्लेटो के न्याय सिद्धांत की आलोचना

प्लेटो के न्याय सिद्धांत के विश्लेषण के उपरांत इसकी कुछ आलोचनाएँ भी प्रस्तुत की गई हैं जो इस प्रकार है:-

(1):⇒ इसकी आलोचना प्रस्तुत करते हुए प्रो॰ बार्कर ने कहा कि प्लेटो द्वारा प्रतिपादित न्याय वस्तुतः न्याय है ही नहीं वह मनुष्यों को अपने कर्तव्यों तक सीमित करने वाली एक भावना मात्र है। वर्तमान समय में न्याय को कानून का पालन कराने वाले एक अस्त्र के रूप में जाना जाता है लेकिन प्लेटो इसे केवल कर्तव्य भावना तक सीमित कर देता है। नैतिक कर्तव्य भावना तथा कानूनी बाध्यता इन दोनों को मिलाकर प्लेटो एक अस्पष्ट स्थिति उत्पन्न कर देता है जो न्याय सिद्धांत को अव्यवहारिक बना देती है।

(2):⇒ प्लेटो का न्याय सिद्धांत निष्क्रिय एवं बंद प्रणाली का परिचायक है। जहाँ न्याय का सिद्धांत व्यक्ति को विभिन्न प्रकार के अधिकारों के लिए प्रेरित करता है वहीं प्लेटो अपने सिद्धांत में व्यक्ति को इतना आत्म-संयमी एवं मर्यादित बना देता है कि उसकी सामाजिक उत्थान की भावना एवं कार्य हाशिए पर चला जाता है।

(3)⇒ प्लेटो का न्याय सिद्धांत व्यक्ति के अधिकारों के बजाय उसके लिए निर्धारित कर्तव्यों पर अधिक बल देता है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के लिए उचित नहीं है।

(4):⇒ प्लेटो अपने न्याय सिद्धांत में आत्मा के नैसर्गिक गुणों के आधार पर तीन वर्गों की कल्पना प्रस्तुत करता है जो वास्तविकता से मेल नहीं खाती है।

(5)⇒ प्रो॰ सेबाईन प्लेटो के न्याय सिद्धांत को कल्पना पर आधारित, जड़, आत्मपरक, निष्क्रिय, अनैतिक, अव्यवहारिक एवं अविश्वसनीय मानते है.

Scanned with CamScanner

उनका मानना है कि यह न्याय का सिद्धांत स्थायित्व का सिद्धांत है जो कालांतर में वर्ग सहयोग की बजाय वर्ग संघर्ष को जन्म देगा।

प्लेटो के न्याय सिद्धांत का मूल्यांकन

प्रत्येक दार्शनिक के विचार उसकी परिस्थितियों की उपज होता है और प्लेटो इससे विलग नहीं है। प्लेटो का न्याय सिद्धांत संयम, संतुलन और कर्तव्य-परायणता का पर्यायवाची है। वह न्याय सिद्धांत के माध्यम से समाज और राज्य में एकता स्थापित करने का प्रयास करता है। प्लेटो यह मानकर चलता है कि आत्मारोपित कर्तव्य-परायणता तथा व्यवसायिक दक्षता से न केवल विभिन्न वर्गों में कार्य कुशलता आएगी अपितु सामाजिक एकता की स्थापना भी होगी।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्लेटो का न्याय सिद्धांत तत्कालीन एथेन्स की प्रमुख समस्याओं का उत्तर है।

Scanned with CamScanner